



آداب العطاس

छींकने के शिष्टाचार

हिंदी باللغة الهندية

الشيخ الدكتور هيثم بن محمد جميل سرحان

हिंदी अनुवाद: साबिर हुसैन पुत्र मुहम्मद मुजीबुर रहमान

छींक कहते हैं: किसी कारणवश व्यक्ति की नाक से तीव्र वेग के साथ हवा के निकलने को।

इसमें अनेक लाभ हैं जिन्हें आधुनिक चिकित्सा ने सिद्ध किया है।

छींकने के कुछ धार्मिक प्रावधान एवं शरई शिष्टाचार हैं।

उनमें से एक यह है कि अल्लाह तआला छींकने को पसंद करता है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “सर्वोच्च अल्लाह छींकने को पसंद करता है”।

हदीस में छींकने के बाद अल्लाह की प्रशंसा करने का वचन बताया गया है, जोकि **الحمد لله** “अलहमदुलिल्लाह” कहना है।

और इसमें अल्लाह का अपने बंदे पर महान अनुग्रह की ओर इशारा है, कि उसने छींक द्वारा अनुगृहीत कर के उससे हानि को दूर कर दिया, फिर उसके लिए अलहमदुलिल्लाह कहने का विधान बनाया जिस पर उसे पुण्य दिया जाता है, तत्पश्चात ख़ैर अर्थात् भलाई की दुआ करने को कहा।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया: “तुम में से कोई जब छींके तो **الحمد لله** अलहमदुलिल्लाह कहे, तथा इसे सुनने वाला उसका भाई अथवा दोस्त **يرحمك الله** “यरहमुकल्लाह” कहे, और जब कोई यरहमुकल्लाह कहे तो छींकने वाला उसके उत्तर में **يهديكم الله ويصلح بالكم** “यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बा लकुम” कहे”। (बुखारी: हदीस संख्या: ६२२४)।

एक मुसलमान का यह अधिकार है कि जब वह छींके तथा अलहमदुलिल्लाह कहे तो सुनने वाला उसके लिए ख़ैर अर्थात् भलाई की दुआ करे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: “तुम में से कोई जब छींके तथा अलहमदुलिल्लाह कहे, तो उसका अधिकार बन जाता है कि जो भी मुस्लिम इसे सुने वह “यरहमुकल्लाह” कहे”।

तथा “यरहमुकल्लाह” का अर्थ है कि सर्वोच्च अल्लाह इसे तुम्हारे लिए जारी रखे ताकि तुम स्वस्थ रहो।

यदि कोई “यरहमुकल्लाह” कहे तो छींकने वाले के लिए मुस्तहब है कि वह उसे उत्तर में “यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बा लकुम” कहे।

किंतु जो व्यक्ति छींकने के पश्चात “अलहम्दुलिल्लाह” न कहे तो उसके लिए यरहमुकल्लाह नहीं कहा जायेगा।

जो छींके तथा भूलवश अलहम्दुलिल्लाह न कहे तो वहां उपस्थित मुस्लिम के लिए मुस्तहब है कि उसे याद दिलाए कि वह अलहम्दुलिल्लाह कहे तथा उसके उत्तर में फिर वह “यरहमुकल्लाह” कहे।

जो व्यक्ति बार-बार छींकता हो तो तीन बार “यरहमुकल्लाह” कहने के बाद इसे नहीं कहा जायेगा, बल्कि उससे कहा जायेगा: **عافاك الله إنك مزكوم**, (आफ़ाकल्लाहु इन्नका मज़कूम)। नमाज़ी यदि जुमा के ख़ुत्बा के दौरान छींके तो चुपके से अलहम्दुलिल्लाह कहे, परंतु यदि वह ज़ोर से अलहम्दुलिल्लाह कह दे तो अन्य नमाज़ियों के लिए जायज़ नहीं है कि वह उसके उत्तर में यरहमुकल्लाह कहे।

इमाम यदि ख़ुत्बा देने के दौरान छींके एवं ज़ोर से अलहम्दुलिल्लाह कहे, और अलहम्दुलिल्लाह कह कर चुप हो जाये तो उसके उत्तर में यरहमुकल्लाह कहने में कोई हर्ज नहीं है, किंतु ऐसा कहने के पश्चात इमाम चुप न हो बल्कि ख़ुत्बा जारी रखे तो फिर यरहमुकल्लाह नहीं कहा जायेगा।

यदि कोई ग़ैर मुस्लिम छींकने के पश्चात अलहम्दुलिल्लाह कहे तो उसे सुनने वाला मुस्लिम उससे **(هداك الله)** हदाकल्लाह अथवा **عافاك الله** आफ़ाकल्लाह) कहेगा, क्योंकि यहूदी लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास छींकने के पश्चात इस आशा में अलहम्दुलिल्लाह कहा करते थे कि आप उन्हें यरहमुकल्लाह कहेंगे, परंतु आप उन्हें कहते: **يهديكم الله ويصلح بالكم** (यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम)

शौचालय में बैठा व्यक्ति यदि छींकने वाले को अलहम्दुलिल्लाह कहते सुने तो उसके लिए उसका उत्तर देते हुए यरहमुकल्लाह कहना मकरूह अर्थात् अप्रिय है, इसी प्रकार से

शौचालय में बैठे हुए व्यक्ति के लिए छींकने के पश्चात ज़ुबान से अलहमदुलिल्लाह कहना मकरूह है। परंतु उसके लिए अपने मन में ऐसा कहना जायज़ है।

छींकने वाला व्यक्ति छींकते समय अपनी आवाज़ धीमी रखे तथा अलहमदुलिल्लाह जोर से कहे, और छींकते समय अपने मुख को ढाँप ले ताकि उसके मुँह अथवा नाक से कोई ऐसी चीज़ न निकले जो उसके पास बैठे हुए व्यक्ति के लिए कष्ट का कारण बने।

तथा वह अपनी गर्दन को दायें या बायें न घुमाए ताकि उसे हानि न पहुँचे।